E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

वाक्सूक्तम् (मन्त्र 1 से 3)

वेद-ऋग्वेद | मण्डल संख्या- १० | सूक्त संख्या १२५

ऋषि- | वाक् देवता-वाक् अथवा परमात्मा | छन्द- त्रिष्टुप् २ जगती

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरा-

म्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।

अहं मित्रावरुणोभा विभ-

र्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥१॥

पदपाठ- अहम्। रुद्रेभिः। वसुऽभिः। चरामि। अहम्। आदित्यैः। उत। विश्वऽदेवैः। अहम्। मित्रावरुणा। उभा। विभर्मि। अहम्। इन्द्राग्नी इति। अहम्। अश्विना। उभा॥

सा० भा०– अहं सूक्तस्य द्रष्ट्री वागाम्भृणी यम् ब्रह्म जगत्कारणं तद्रूपा भवन्ति रुद्रेभिः रुद्रैरैकादशभिः। इत्थंभावे तृतीया। तदात्मना चरामि। एवं वसुभिः इत्यादौ तत्तदात्मना चरामीति योज्यम्। तथा विभर्मि धारयामि। इन्द्राग्नी अपि अहम् एव धारयामि। उभा उभौ अश्विना अश्विनावपि अहम् एव धारयामि। मयि हि सर्वं जगच्छुक्तौ रजतमिवाध्यस्तं सद् दृश्यते। माया च जगदाकारेण विवर्तते। तादृश्या मायया आधारत्वेनासङ्गस्यापि ब्रह्मण उक्तस्य सर्वस्योपत्तिः।।

अन्वय– अहं रुद्रेभिः वसुभिः चरामि, अहं आदित्यैः उत् विश्वदेवैः (चरामि), अहं मित्रावरुणा उभा विभर्मि, अहम् इन्द्राग्नी अहम् उभा अश्विना (विभर्मि)।

पदार्थ– अहम्= मैं (अम्भृण नामक महर्षि की पुत्री वाक्), रुद्रेभिः= रुद्रों साथ, या रुद्रों के रूप में, वसुभिः= वसुओं के साथ या वसुओं के रूप में, चरामि= विचरण करती हूँ, अहम् = मैं (ही), आदित्यैः आदित्यों के साथ या आदित्यों के रूप में, उत = और, विश्वदेवैः= विश्वदेवों के साथ या विश्व देवों के रूप में, चरामि= चलती हूँ; विचरण करती हूँ, अहम्= मैं (ही), मित्रावरुणा= मित्र और वरुण, उभा= दोनों को विभर्मि धारण करती हूँ, भरण करती हूँ, अहम् = मैं (ही), इन्द्राग्नी= इन्द्र और अग्नि को, अहम्= मैं (ही), उभा= दोनों, अश्विना= अश्विनी कुमारों को।

अनुवाद– **मैं (वाक्) रुद्रों और वसुओं के रूप में चलती हूँ (विचरण करती हूँ), मैं (ही) आदित्यों और विश्वदेवों के साथ (या-आदित्यों और विश्वदेवों के रूप में) (विचरण करती हूँ), मैं मित्र और वरुण दोनों को धारण करती हूँ। मैं (ही) इन्द्र और अग्नि को तथा मैं (ही) दोनों अश्विनीकुमारों को (धारण करती हूँ)।**

व्याकरण-

१. मित्रावरुणा- मित्रश्च वरुणश्च मित्रावरुणा, मित्रावरुणौ के स्थान पर वैदिक रूप।

२. उभा- उभौ का वैदिक रूप।

३. अश्विना– 'अश्विनौ' के स्थान पर वैदिक रूप अश्विना प्रयुक्त हुआ

४. विभर्मि– √भृ + लट्, उत्तमपुरुष एकवचन

५. रुद्रेभिः- रुद्र शब्द का तृतीया बहुवचन में वैदिक रूप, लौकिक संस्कृत में रुद्रैः।

अ॒हं सोम॑माह॒नसं॑ बिभ-

र्म्य॒हं त्वष्टा॑रमु॒त पू॒षण॒ं भग॑म्।

अ॒हं द॑धामि द्रवि॑णं ह॒विष्म॑ते

सु॒प्रा॒व्ये॒ ३ यज॑मानाय सुन्व॑ते॥२॥

पदपाठ-अ॒हम्। सोम॑म्। आ॒ह॒नस॑म्। बि॒भ॒र्मि॒। अ॒हम्। त्वष्टा॑रम्। उ॒त। पू॒षण॑म्। भग॑म्। अ॒हम्। द॒धामि॒। द्रवि॑णम्। ह॒विष्म॑ते। सु॒प्र॒ऽअ॒व्ये॑। यज॑मानाय। सुन्वते॥

सा०भा०-आहनसमाहन्तव्यमभिषीतव्यं सोमं यद्वा शत्रूणामाहन्तारं दिवि वर्तमानं देवतात्मानं सोममहमेव बिभर्मि। तथा त्वष्टारमुतापि पूषणं भगं चाहमेव बिभर्मि तथा हविष्मते हविर्भिर्युक्ताय सुप्राव्ये शोभनं हविर्देवानां प्रापयित्रे तर्पयित्रे। अवतेस्तर्पणार्थात् 'अविस्तृस्तृतन्त्रिभ्यः ई' (उणा० ३.१५८) इतीकारप्रत्ययः। यगि। 'उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य' (पा० ८.२.४) इति सुपः स्वरितत्वम्। सुन्वते सोमाभिषवं कुर्वते। 'शतुरनुमः' (पा० ६.१.१७३) इति चतुर्थ्या उदात्तत्वम्। ईदृशाय यजमानाय द्रविणं धनं यागफलरूपमहमेव दधामि धारयामि। एतच्च ब्रह्मणः फलदातृत्वं 'फलमत उपपत्तेः' (ब्र०सू० ३.३.३८) इत्यधिकरणे भगवता भाष्यकारेण समर्थितम्।

अन्वय- अहम् आहनसं सोमं बिभर्मि, अहं त्वष्टारं पूषणम् उत भगम्, (बिभर्मि)। अहं हविष्मते सुप्राव्ये सुन्वते यजमानाय द्रविणं दधामि।

पदार्थ- अहम्= मैं, आहनसं= कूट कर निचोड़े गए या शत्रुसंहारक, सोमम्= सोम को, बिभर्मि= धारण करती हूँ, अहम्= मैं, त्वष्टारम्= त्वष्टा को, पूषणम्= पूषा को, उत= और, भगम्= भग को, अहं= मैं, हविष्मते= हवि देने वाले, हवि से युक्त, सुप्राव्ये= उत्तम हवि से देवताओं को तृप्त करने वाले, सुन्वते= सोम का सेवन करने वाले, सोम को पीसने वाले, यजमानाय= यजमान के लिए, द्रविणं= धन को, दधामि= धारण करती हूँ, प्रदान करती हूँ।

अनुवाद- **मैं कूट कर निचोड़े गए सोम को धारण करती हूँ। मैं (ही) त्वष्टा को, पूषा को और भग (नामक देवताओं) को (धारण करती हूँ)। मैं हवि देने वाले को, उत्तम हवि से देवताओं को तृप्त करने वाले, सोम का सेवन करने वाले यजमान के लिये धन को धारण (प्रदान) करती हूँ।**

व्याकरण-

१. आहनसम् - आ + √हन् + असुन्।

२. हविष्मते- हविष् + मतुप् चतुर्थी एकवचन।

३. सुप्राव्ये- सु+ प्र + अव् + ई, चतुर्थी एकवचन।

४. सुन्वते- √सु + श्नु + शतृ, चतुर्थी एकवचन।

अ॒हं रा॒ष्ट्री स॒ङ्ग॑मनी॒ वसू॑नां

चिकि॒तुषी॑ प्रथ॒मा य॒ज्ञिया॑नाम्।

तां मा॑ दे॒वा व्य॑दधुः पुरु॒त्रा

भूरि॑स्थात्रां॑ भू॒र्यावे॒शय॑न्तीम्॥३॥

पदपाठ-अ॒हम्। राष्ट्री। स॒म्ऽगम॑नी। वसू॑नाम्। चि॒कि॒तुषी॑। प्र॒थ॒मा। य॒ज्ञिया॑नाम्॥ ताम्। मा। दे॒वाः। वि। अद॒धुः। पुरुऽत्रा। भूरिऽस्थात्राम्। आ॒ऽवे॒शय॑न्तीम्।

सा०भा०- अहं राष्ट्री। ईश्वरनामेतत्। सर्वस्य जगत ईश्वरी तथा वसूनां धनानां सङ्गमनी सङ्गमयित्र्युपासकानां प्रापयित्री। चिकितुषी यत् साक्षात् कर्तव्यं परं ब्रह्म तज्ज्ञातवती स्वात्मतया साक्षात्कृतवती। अत एव यज्ञियानां यज्ञार्हरिणां प्रथमा मुख्या या एवङ्गुणविशिष्टाहं तां मा भूरिस्थात्रां बहुभावेन प्रपञ्चचात्मनावतिष्ठमानां भूरि भूरीणि बहूनि भूतजातान्यावेशयन्तीं जीवभावेनात्मानं प्रवेशयन्तीमीदृशीं मां पुरुत्रा बहुषु देशुषु व्यदधुर्देवा विदधति कुर्वन्ति। उक्तप्रकारेण वैश्वरूप्येणावस्थानाद् यद्यत कुर्वन्ति तत्सर्वं मामेव कुर्वन्तीत्यर्थः।

अन्वय- अहं राष्ट्री वसूनां सङ्गमनी चिकितुषी यज्ञियानां प्रथमा तां भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् मा देवाः पुरुत्रा व्यदधुः।

पदार्थ-अहं= मैं, राष्ट्री= स्वामिनी, वसूनां= धनों को, सम्पत्तियों को, सङ्गमनी= देने या प्राप्त करने वाली, चिकितुषी= जानने वाली, ज्ञानवती, तत्त्वज्ञानी, ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली, यज्ञियानाम्= पूजनीयों में, पूज्यों में, प्रथमा= प्रमुख (हूँ), ताम्= उस, भूरिस्थात्राम्= अनेक स्थानों में स्थित, भूर्यावेशयन्तीम्= अनेक प्राणियों में (अपना) प्रवेश करती हुई, मा= मुझको, देवाः= देवों ने, पुरुत्रा= अनेक स्थानों में, व्यदधुः= पृथक्-पृथक् (विविध रूपों में) स्थापित किया।

अनुवाद- **मैं (सम्पूर्ण विश्व की) स्वामिनी हूँ, धनों को प्राप्त कराने वाली हूँ, ज्ञानवती, पूजनीयों में प्रमुख हूँ, अनेक स्थानों में स्थित और अनेक प्राणियों में (अपना) प्रवेश करती हुई मुझको देवों ने अनेक स्थानों में पृथक्-पृथक् (विविध रूपों में) स्थापित किया है।**

व्याकरण-

१. चिकितुषी– √कित् + क्वसु + ङीप्, प्रथमा एकवचन।

२. भूर्यावेशयन्तीम्- भूरि + आ + √विश् (णिजन्त)+ शतृ + डीप्, द्वितीया एकवचन।

३. व्यदधुः- वि + √धा + लुङ्, प्रथमपुरुष बहुवचन।